दुर्मेधाः=दुर्बुद्धि मनुष्य; **धृतिः**=धृति; **सा**=वह; **पार्थ**=हे अर्जुन; **तामसी**=तामसी है।

अनुवाद

जिसके द्वारा दुर्बुद्धि मनुष्य स्वप्न, भय, शोक, विषाद और मोह को ही सदा धारण किए रहता है, वह धृति तामसी है।।३५।।

तात्पर्य

यह नहीं समझना चाहिए कि सात्त्विक पुरुष को कभी स्वप्न नहीं होता। यहाँ स्वप्न का अर्थ अतिशयन है। सत्त्व, रज और तम, इन तीनों गुणों में स्वप्न होता है; यह बिल्कुल स्वाभाविक है। परन्तु जो अतिनिद्रा और प्राकृतविषयों को भोगने का गर्व किए बिना नहीं रह सकते, वे सदा प्राकृत्-जगत् प्रभुत्व करने के ही स्वप्न देखा करते हैं। जिनके मन, प्राणा और इन्द्रियाँ इसी के परायण हैं, वे निश्चित रूप से तामसी हैं।

सुखं त्विदानीं त्रिविधं शृणु मे भरतर्षभ।
अभ्यासाद्रमते यत्र दुःखान्तं च निगच्छति।।३६।।
यत्तदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम्।
तत्सुखं सात्त्विकं प्रोक्तमात्मबुद्धिप्रसादजम्।।३७।।

सुखम्=सुख; **तु**=भी; **इदानीम्**=अब; **त्रिविधम्**=तीन प्रकार का; **शृणु**=सुन; **मे**=मुझ से; **भरतर्षभ**=हे भरतश्रेष्ठ अर्जुन; **अभ्यासात्**=अभ्यास से; **रमते**=रमण करता है; **यत्र**=जिसमें; **दुःखान्तम्**=दुःखों के अन्त को; **च**=तथा; **निगच्छति**=प्राप्त होता है; **यत्**=जो; **तत्**=वह; **अग्रे**=पहले; **विषम् इव**=विष जैसा; **परिणामे**=अन्त में; **अमृत उपमम्**=अमृत के समान है; **तत्**=वह; **सुखम्**=सुख; **सात्त्विकम्**=सात्त्विक; **प्रोक्तम्**=कहा गया है; **आत्मबुद्धिप्रसादजम्**=आध्यात्मिक बुद्धि के प्रसाद से होने वाला।

अनुवाद

हे भरतश्रेष्ठ अर्जुन! अब सुख भी मुझ से तीन प्रकार का सुन। इस सम्बन्ध में, जो पहले विष जैसा लगता है, परन्तु परिणाम अमृत के समान है; जिसमें रमण करता हुआ जीव संसारदुःख के अन्त को प्राप्त होता है, वह स्वरूप-साक्षात्कार की जागृति करने वाला सुख सात्त्विक है।।३६-३७।।

तात्पर्य

बद्धजीव प्राकृतसुख को भोगने के लिए बारम्बार चेष्टा करता है, अर्थात् चर्बित को फिर-फिर चबाता है। परन्तु इस प्रकार भोग करता हुआ भी वह कभी किसी महात्मा के सत्संग से प्राकृत-बन्धन से मुक्त हो सकता है। भाव यह है कि बद्धजीव किसी न किसी प्रकार की इन्द्रियतृप्ति में निरन्तर संलग्न रहता है। परन्तु सत्संग के द्वारा जब उसकी समझ में आता है कि विषय सुख तो वास्तव चर्बित को फिर-फिर चबाने के समान तुच्छ है, और जब इस ज्ञान से उसकी यथार्थ स्वरूपभूत कृष्णभावना जागृत हो जाती है, तभी वह चबाये को बार-बार चबाने से मिलने वाले सुख से छूट पाता है।

स्वरूप-साक्षात्कार के साधन में मन और इन्द्रियों को वश में करके आत्मतत्त्व